4.1.23.pdf

Title : Devi Mahatmyam

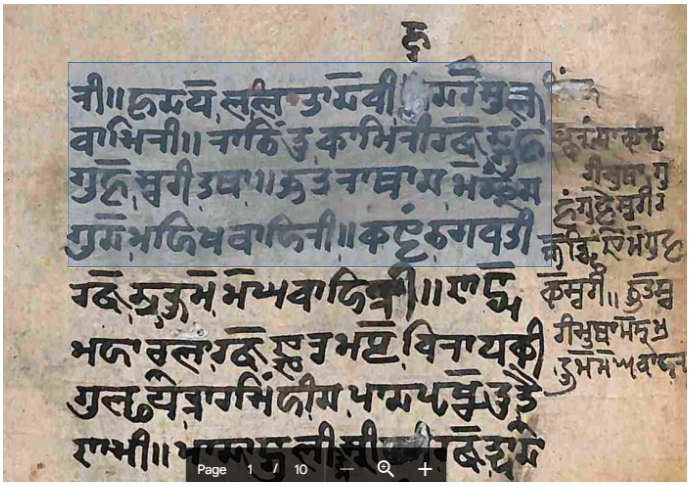

हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ ३१ ॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
मेढ्रं रक्षतु दुर्गन्धा पायुं मे गुह्यवाहिनी ॥ ३२ ॥

कट्यां भगवती रक्षेदूरू मे मेघवाहना ।
जङ्घे महाबला रक्षेत् जानू माधवनायिका ॥ ३३ ॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु कौशिकी ।
पादाङ्गुलीः श्रीधरी च तलं पातालवासिनी ॥ ३४ ॥

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।

Ref : https://archive.org/details/TheDeviMahatmyamOrSriDurgaSaptasatiSwamiJagdisvarananda/page/n19/mode/2up

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

+ न्गांकृभम, रुक
र. देवण्ड, गोक्रुयं

वृक्रल्ली सूयंस्कुरे सुगीउघृ॥ स्वजङ्क
ंभनि वृक्ष्टुि रद्धउं ण्मगविल्ली॥ भ्रू
ल्ुपनि उघाह्यनं भभानि मुत्रभेव
म॥ वक्रू जनुसभ रद्ध्रुल्लकल्प
भमिनै ॥ रमंकुयं उघागंतू मवृ
भमिष योगिनी॥ भंवृ गण भुमस्त्रव
रद्वेज्ञागयल्ली उघृ॥ जयुम्र रद्व
वगादि ण्म्नं रद्धउ वेष्णवी॥ घम:
कीर्त्तिम लक्ष्मी म भम रद्धउ मस्ति
ल्ली॥ उद्गुल्ली रद्धउ कुरे धनु रद्धउ
मध्यिक॥ भद्र रुद्रम्भ ज मवी ठटं
रद्धउ ठैरवी॥ पक्तुं विपवि रद्धम
ंरद्धभक्क गीउघृ॥ गण ह्रुरे भजल
क्ष्मी विलयभचउ: भिउ॥ रद्धजी
ंउं [illegible] ंवल्लिउ कवम नउ॥ उक्षुंवं
रद्धउं मवी गायत्री धाय न मिनी॥ र

घ
भ०
०

यक्षू

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कथमायकुं॥ विस्नु नेत्र हृंदेवो भ्र
लेमस्तु यफट॥ मूलबःमचक्रं॥
उंत्रैनमः॥ मूल कापिमूल
कमेत्रमचक्र॥ मायानेत्र उवा
कल्नामायुट उवाभायं॥ प
वमकमलिविन्हमू॥ मपूर्वारंहूं
[illegible] ज्ञिगुरुनं उदउ॥ [illegible] वं
धूमूँनमः॥ मनेत्रेव सुग्रयेनमः
॥ [illegible] ह्रीनमसह्रि [illegible] येनमः॥ पवं
[illegible] हैम॥ [illegible] ह्रींनमः पश्चिमवु
यहो॥ [illegible] ममभ [illegible] ये उमीसे॥ [illegible]
विस्नुरं माहेनमः॥ मूलेनेत्र [illegible]
राय॥ उउ [illegible] नम॥ [illegible] मव्रं मकुं
गलं रा [illegible] मुपं पश्चिम [illegible] लकौ॥
कम [illegible] म मिरः॥ पकुं [illegible] उमीम
मवत्रि कमः॥ उमभी सुमलं

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुंडति॥०३॥ ॥ॐ त्रिनवाक्षरवि
ति:॥ ॥ ॥ त्रिंक्षरसी भद्रमती
सर्वी भद्रकस्य भाद्रकंय ऋषि: प्रस्तु
छंद: भद्रवती सुगीलं रमा मात्रे:
भद्रक लिपितत्र सिद्धूजं॥ पां० वित
योग:॥ मद्गत्रिशील ममसाय करं
त्रिनक्षुं त्रिमेध तरं मुकलया विक
भद्रकीएभ॥ भिंज भनं भमभि
हु तत्रं मफजां॥ ड्रवा विकं मुरि
त्रभं: पदनी नभाभि॥ त्रिक्षरसी
भद्रमतिक भाला भद्रुस्य भूवम
मति उस्य॥ श्रीवृक्ष ऋषि:॥ गायत्री
छंद:॥ श्रीभद्रकाली देवता प्रत्र
नए मक्ति:॥ यत्रमन्त्रिक गीलं॥
मद्रिभद्रं॥ ऐंद्र भ्रत्रि भद्री श्रीभ
द्रकाली श्रीहजं॥ खषम मात्रिप

ॐ विनियोगः ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] कीलकं [illegible]
शिरः [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible]
नीलास्य [illegible] [illegible]
सर्वं [illegible] कालिकायै ॥ [illegible]
[illegible] यन्त्राय ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ਨਮਨ॥ ਤਕ੍ਰਵ: ਸਤ੍ਵੈਕ੍ਰਪ: ਕੈਲਾ
ਵਿਸ਼੍ਵਮਿਨਭੁਜ॥ ੫॥ ਤਮੁ ਤੈਗਠਵਸੁ
ਸੁ ਭਤਿਪੁਰਲਸਜ੍ਞਿਨ:॥ ਨੂਨੇ ਗਧਿ
ਮਤੈਦ੍ਵੰਦ੍ਵੰ ਕੈਲਾਵਿਸ਼੍ਵੰ ਸਿਕਿਲਿਤ:
॥੬॥ ਤਤ: ਸ੍ਵਪੁਰਸ੍ਵਾਯਾਂਤਿ ਵਿਲਾਸ
ਸਾ ਧਿਯੇ ਠਵਤ॥ ਤੁਕੂਤ: ਮਸਜ
ਕਾਗਸੈ ਭੁਜ ਪੁਠਲਾਸਿਠਿ:॥੭॥
ਧਮਾਹੈ ਤ੍ਰਲਿਠਿਸ੍ਵੈਂ ਸ੍ਵਲਸ੍ਟ ਸ
ਗਸ੍ਮਠਿ:॥ ਕੈਸੈਰਲੰ ਸਾਪਠਤੰ ਤਤ੍ਰ
ਪਿਸ੍ਵ ਧਰਮਤ:॥੮॥ ਤਤੋ ਭਗਵਾਨ
ਤ੍ਰਾਣੇਨ ਠਤਭੂਸ੍ਮਸਕ੍ਰਪਤਿ:॥
ਏਕਾਕੀ ਜਯਮਾਤ੍ਰਜਠ ਣਗਾਮਗ
ਜਨੰ ਵਨਮ॥੯॥ ਮਤੁਤਸੁਮਸਲੁ
ਕੀ ਸ੍ਵਿਣਵਦ: ਸਮਣਸ:॥ ਭੂਮਾ
ਤੁਸੁਾਪਠ ਕੀਲੰ ਭੁਨਿਸਿਧੈ ਧਸੈ
ਕਿਤਮ॥੧੦॥ ਤਤੋ ਕੰ ਸਿਕ੍ਸ਼ਕਲੰਸ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मविनाऽऽत्मममृतः ॥ उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ वि
संभुम्भिन्नविवर्गम् ॥१०॥ मि
मित्रयन्त्रं तत्र ममन्त्र लक्ष्मणान
सः ॥ मन्त्रचं: पालितं प्रवं मया
जीवं धृतिं त्वत्त ॥११॥ ममृतं सु
रमन्त्रे तत्र मृतः पालितं नवा ॥ न
एन ममुण नेम सुगेजन्ती मम
मः ॥१२॥ मम वैरिवर्गं यातः क
कैगान्म लमृते ॥ यम मन्त्रग
तानि तु भूमारूपनकोएने मम
नकीर्ति पूर्वं तत्र नुचतुर मजी
ष्टुतम ॥ मम मृत्युमीलमन्त्र
च मतत्तं हृदयम ॥१३॥ मन्त्रितः
मतिसः पन त्रयं के मेगाभिवृत्ति ॥
पत्तमन्त्र हस्त्र मतत्तं सितुयामाम
पाजिवः ॥१४॥ तत्र विधृ सुमाह

रि:

म
सं
७७

मृ

म वैस्त भंकं स्रज्ञम:॥ भयष्टै
भुन कम्बुकि: जउक्ष्मागभनिइक:॥
०१॥ भमीकु उवकम्भ तुंमुम्न
उवलहृमि॥ उहकल्ह वम्सु
भृरूपउ: भृल्ययैम्मिउभ॥०३॥
भृहृ वाम्स भंउ वैमृ: भ्मूयाव्वन
उे रपभ॥ वम्रृउवाम्स॥ भम
पिव्रृम वैमृिफ भद्दत्रैणनितं
उले॥ भइिह्रगविरसुस्नणनले
हमभ वृकि:॥ विफीन: भुरए
नैरुगः ... यभ णनभ॥
०४॥ वंनभहृ गउिम: पी निरसु
स्नायु छक्रुकि:॥ भैफं नवौम्भ भृडु
णु उमला उमलणक्षिकभा॥ ०३
भुवद्विं भुलएना नंयस स्रगाणुं
माग्रुभंमिउ:॥ किंनउवंगफे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१२

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri